विषय : पारिस्थितिक स्वच्छता और समाज

पारिस्थितिक स्वच्छता समाज केलिए

हमारे शष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के दो लक्ष्य थे - स्वतंत्रता एवं स्वच्छता । वे इस प्रमाण में मानते थे कि सिर्फ स्वतंत्रता प्राप्त करने से भारत विकसित नही होगा । बल्कि उसका कोना - कोना साफ होना चाहिए । स्वच्छ एवं स्वस्थ स्थिति में ही लोग बीमारियों से मुक्त रहते है । ऐसी स्थिति में ही अच्छे आशय एवं आविष्कार सामने आते है जो हमारी भविष्य केलिए लाभदायक होते है। स्वच्छता भिन्न - भिन्न प्रकार के होते है और उसमें सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण पारिस्थितिक स्वच्छता है ।

पारिस्थितिक स्वच्छता आजकल एक गंभीर विषय हो चुका है । बरसों से हम परिस्थिति और मनुष्य के बीच का संबंध देखते आ रहे है और अब तक ये जान चुके है कि जितनी हम ~~अपनी~~ परिस्थिति एवं प्रकृति का ख्याल रखते है वो भी हमारे उतनी ख्याल रखती है। इसलिए पारिस्थितिक स्वच्छता का ख्याल रखना हमारे

हमारे जीवन का सवाल है। समाज के हर एक व्यक्ति उनके परि आसपास की प्रकृति यानी परिस्थिति से जुड़े होते हैं। इसलिए हमारा हर व्यवहार उसपर असर डालता है। आजकल ये अच्छाई से ज़ादा बुराई ला रहा है।

पारिस्थितिक स्वच्छता पर पड़ा एक बहुत बड़ा कहर है प्रदूषण। प्रदूषण परिस्थिति की को हर तौर पर हानी पहुँचाता है। लोगों के किए गैर-जिम्मेदारी के कारण आज पंच जीवन के लिए अनिवार्य वस्तुएं यानी पानी, भोजन, वायु आदि प्रदूषित हैं। भूमंडल प्रदूषण, सागर प्रदूषण आदि आज भीषण रूप धारण कर चुकी है। हमारे शोषण करने से प्रकृति और अन्य जीवजंतु बेहद परेशान है। समाज के बहुत सारे व्यक्ति गैर-जिम्मेदारी दिखाते हैं और कचरा सामूहिक स्थानों में फेंक देते हैं। सरकार बहुत सारे कानून लागू करते हैं पर कुछ लोग रात के अंधेरे में सामूहिक जगहों पर कचरा फेंककर जाते हैं। 'अपना कचरा अपनी जिम्मेदारी'

का प्रमाण भूलकर ये सोचते हैं कि कोई और आकर उनका कचरा वहाँ से ले जाएगा। इसका एक अलग प्रदर्शन यहाँ के कारखाने कर रहे हैं। कारखानों से आती मलीन जल में धातु, रसायन आदि अधिक मात्राओं में होते हैं जो सीधा नदियों में निर्माजन किया जाता है। नदियाँ ये जल समुद्र तक ले जाती हैं। इससे जो जीव-जंतु उनमें बसते हैं उनका भी नुकसान होता है और जो लोग पीने केलिए, खाने बनाने केलिए और अन्य जरूरी कामों केलिए नदी जल का उपयोग करते हैं उनकी जान और स्वास्थ्य का भी ~~नुकस~~ नुक्सान होता है। इन्ही कारखानों से और ऑटोमोबाइलों से आती विषैली धूम से भीषण वायु प्रदूषण होता है। वायु प्रदूषण का और कारण प्लास्टिक ~~का~~ जलाना और पटाके जलाना भी है।

कही गई सारी प्रदूषण हमारे समाजवाले ही करते हैं। उनकी सोच में भी ये बात नही आती कि ऐसी प्रदूषण करने से उनकी परिस्थिति खराब हो रही है और उन्ही पर इसका बदतर प्रभाव आता है।

समाज का स्वार्थ मनोभाव इस विषय में प्रकट होता है। समाज के काफी सारे लोग अभी भी इस झूठे बिश्वास में रह रहे हैं कि प्रदूषण हो रहा है तो उन्हें क्या। शायद उनको अभी भी साफ चीजें प्राप्त हो रही हैं, पर बहुत सारी जीव जंतुओं को और समाज के अन्य लोगों को इसका भीषण परिणाम देखने पडते हैं। पारिस्थितिक स्वच्छता इसलिए जरूरी नही कि वो एक व्यक्ति या प्रत्येक समाज को स्वस्थ रखें। बल्कि इसलिए जरूरी है क्योंकि वो इस धरती के हर व्यक्ति, हर जीव-जंतु, हर प्राणी को जीवित रहने केलिए ज़रूरी है। पारिस्थितिक स्वच्छ-हीनता का अंतरफल हमें नही आनेवाली पीढ़ी को भुगतना पडता है। आज के समाज की गैर-ज़िम्मेदारी और लापरवाही का फल आनेवाली पीढी को साफ चीज़ें ना मिलना है।

जैसे हम अपने घर का ख्याल रखते हैं वैसे ही हमारी परिस्थिति भी हमारा घर है और उसका स्वच्छ रखना हमारा कर्तव्य एवं आवश्यकता है।

दिल्ली में चल रही भीषण वायु प्रदूषण, ओज़ोन प्रतल में आ रहा गढ्ढा, ~~बाद~~ अन्टारटिका में तापमान बढना, वैश्विक तापवृद्धि, सागर के पानी में आया बढ़ाव आदि को हम कैसे नज़र अंदाज़ कर सकते हैं और कह सकते हैं कि हम इसका हिस्सा नही, हमें ये सब कुछ नही करता या जीवजंतुओं की पीढ़ा हम क्यूँ देखे ?

मानव परिस्थिति का हिस्सा है और हमारे जीवन-वृत्ति केलिए उसका कुशल रहना ज़रूरी है। इस चीज़ को मायने रखकर भारत सरकार ने 'स्वच्छ भारत अभियान' का शुरुआत किया गया था और अक्तूबर 2 स्वच्छता दिवस माना जाता है। कई सारी भीषण बीमारियों को पराजित करने में स्वच्छता ने हमारा मदद किया था। जैसे ~~ही~~ ~~हम~~ जैसे हम सामूहिक स्वच्छता प्राप्त करते गए, वैसे वैसे पारिस्थितिक स्वच्छता घटती गई। इसलिए आजकल फेफड़ों से संबंधित बीमारी, चमड़ा कानसर जैसी बीमारियाँ सर्वसाधारण हो गई है।

पारिस्थितिक स्वच्छता बढाने केलिए और परिस्थिति प्रदूषण कम करने केलिए समाज का जिम्मेदार होना अति अवश्यक है। हमें हर पर जागृत रहना चाहिए कि कही हमारे कामों से परिस्थिति को कोई दोष तो नही पहुँच रहा। घर के सामान, ऑटोमोबाईल... से लेकर कारखानों से आता कचरा तक परिस्थिति प्रदूषण कर सकता है। ई-कचरा और प्लास्टिक का सही निर्माजन अवश्यक है। उनका अशास्त्रीय निर्माजन प्रकृति का संतुलन बिगाड सकता है। ई-अप्लाईन्सस खरीदते समय स्टार रेटिंग देखना चाहिए। सार्वजनिक ट्रांस्पोट का ज्यादा उपयोग करना चाहिए और सार्वजनिक जगहों पर कचरा नहीं फेंकना चाहिए।

इन सबका होने केलिए ~~पहले~~ पहले इसकी ज़रूरत समाज को पता होना चाहिए। ये धरती और इसका पारिस्थितिक संसाधन हमसे पूर्व बहुत लोग इस्तमाल कर चुके है और आनेवाली पीढी को भी इस्तमाल करना है। स्वच्छता सिर्फ हमारे लिए नही बल्कि हमारे बच्चों केलिए भी है। परिस्थिति को लेकर हम

लापरवाही नही कर सकते है क्योंकि ~~हमार~~ परिस्थिति हमारा समाज, अन्य समाज, भूमंडल, वायुमंडल, सागर आदि चीज़ों का मेल है। विज्ञान और आविष्कार लाते समय हमें इस चीज़ का भी ध्यान रखना चाहिए। प्रकृति संरक्षण, वनवत्करण आदी ~~केलिए~~ ~~ल~~ के बारे में बोधवान हम लोग अक्सर परिस्थिति के बारे में भूल जाते है।

वृक्ष एवं वन ~~हम~~ इसका एक बहुत बडा हिस्सा है। वृक्षों की कटाई भी एक तरीके से परिस्थिति शोषण है। जरूरतों केलिए नही, कुछ लोग अधिक लाभ लाने केलिए ऐसी प्राकृतिक संसाधनों का शोषण करते है। फलांतर आज पहले जैसी हरियाली नही बची, हर जगह प्रदूषण है, ~~हर~~ जलस्रोतों से पानी तक नही पी सकते। ~~जल स्रोतों से में कच~~

परिस्थिति संरक्षण केलिए बहुत सारे कदम देशीय, अंर्तदेशीय तल पर लिए गए, पर इन सबका शुरुआत व्यक्ति और समाज से होना चाहिए।

सरकार, सामूहिक सेवक या उद्योगवृंद देश के कोने - कोने में ~~को~~ नही पहूँच सकते हैं। पर देश के कोने - कोने में वास करते व्यक्ति अपनी आसपास की जगहों का ख्याल तो रख सकते हैं। इसलिए सिर्फ दिखावे केलिए ~~करने~~ परिस्थिति संरक्षण का नारा लगानेवाले हर व्यक्ति और समाज के हर एक व्यक्ति को ये सोचना चाहिए और जिम्मेदार होना चाहिए। खुद करने के साथ - साथ दूसरों ~~के~~ को भी इसके महत्व के बारे में बताना चाहिए।

याद रखें - संरक्षण नहीं किए फिर भी शोषण नहीं करना चाहिए। प्रकृति और परिस्थिति ने समाज के विकास में बडा किरदार निभाया है। आज हमारे पास बहुत सारी सुविधाऐं हैं तो हमारा ये फर्ज़ बनता है कि हम उसका संरक्षण करें। वर्ना फल सर्वनाश होगा। जो नुक्सान आजतक हमने किया उसका प्रायश्चित यही होगा।